शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

वर्ष-२३ अंक-३७ माह : अक्टूबर २०२३

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-२०२३
अंक-३७

माह- अक्टूबर २०२३

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
अवनीन्द्र जादौन, प्रांजल सक्सेना

सम्पादक
ज्योति कुमारी, बबलू सोनी

सह सम्पादक
सुशांत सक्सेना, शंखधर द्विवेदी, आनन्द मिश्रा

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन
मुनीश कुमार, प्रतिभा यादव

विशेष सहयोगी
विकास मिश्रा, अफ़ज़ाल अहमद, साकेत बिहारी शुक्ला

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

मिशन शिक्षण संवाद समूह बेसिक शिक्षा में अपने नवाचारों के माध्यम से प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। समूह की प्रत्येक गतिविधि से प्रदेश और देश के अधिकांश छात्र –छात्राएं लाभान्वित हो रहे हैं। इससे जुड़े हुए समर्पित शिक्षकों द्वारा छात्र– छात्राओं हेतु नित दैनिक सामग्री तैयार कर और यथासम्भव उन तक पहुंचाकर उनके सर्वांगीण विकास का कार्य लगातार किया जा रहा है।

मिशन शिक्षण संवाद समूह शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने के साथ–साथ छात्र छात्राओं एवं शिक्षकों की प्रतिभा को निखारकर उन्हें मंच प्रदान कर उत्साहवर्धन भी कर रहा है। इससे उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। मुझे पूरी उम्मीद है मिशन शिक्षण संवाद की गतिविधियों से इसी प्रकार छात्र छात्राएं लाभान्वित होते रहेंगे।
शुभकामनाओं के साथ

कुंवरसेन
(प्रभारी प्रधानाध्यापक)
राष्ट्रीय शिक्षा पुरस्कार प्राप्त शिक्षक
संविलियन विद्यालय हर्रायपुर
वि० क्षे०– बिसौली, जनपद– बदायूँ

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

''ज्ञान का प्रवाह ही ज्ञान की निर्मलता एवं उपयोगिता का आधार है'' हम सभी जानते हैं कि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में संवाद शब्द का बहुत ही व्यापक महत्व होता है। क्योंकि ज्ञान के प्रवाह के विविध माध्यम होते हैं उन सभी के बीच एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक ज्ञान के प्रवाह को बनाये रखने के लिए लिखित संवाद, मौखिक संवाद, दृश्य आदि संवाद का सहयोग लिया जाता है। आज हम सभी इन सभी संवादों की विविधता का उपयोग या तो ऑनलाइन माध्यम से अथवा ऑफलाइन माध्यम से करते हैं। मिशन शिक्षण संवाद परिवार इन दोनों माध्यमों ऑनलाइन एवं ऑफलाइन का उपयोग ज्ञान के प्रवाह के लिए संवाद के रूप में करता है। ऑफलाइन के रूप में वार्षिक बैठकें, चिंतन शिविर एवं कार्यशालाओं के माध्यम से एवं ऑनलाइन के लिए सोशल मीडिया के विविध प्लेटफॉर्म का उपयोग करता है। जहाँ तक पहुँचने के लिए एवं संवाद में प्रतिभाग करने के लिए गूगल पर मिशन शिक्षण संवाद सर्च किया जा सकता है। मिशन शिक्षण संवाद परिवार के इन्हीं अनेकों ज्ञान के प्रवाह के माध्यमों में एक माध्यम है ''शिक्षण संवाद'' मासिक पत्रिका के रूप में। जहाँ एक ओर ''शिक्षण संवाद'' में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के विविध कार्य, व्यवहार एवं विचारों को विविध स्तम्भों के रूप में सजाकर प्रस्तुत किया जाता है। वहीं दूसरी ओर पाठकों की प्रतिक्रिया एवं मार्गदर्शन फीडबैक के रूप में प्राप्त होता है। जिससे एक–दूसरे से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया, ज्ञान के प्रवाह के रूप में, निर्मलता एवं उपयोगिता को प्राप्त करती है।

आशा है आप सभी सहयोगी शिक्षण संवाद के इस अंक को पढ़कर एवं फीडबैक लिखकर ज्ञान के प्रवाह को अनवरत निर्मल रखने में इसी तरह सहयोग करते रहेंगे। जय हिन्द!

ध्ज्ञन्यवाद।

आपका

विमल कुमार

Index

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति	1
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	2–4
निंदक नियरे राखिये	5
मिशन गीत	6
टी.एल.एम.संसार	7
गतिविधि	8
बात महिला शिक्षकों की	9
बाल कहानी	10
बाल कविता	11
प्रेरक–प्रसंग	12
सदविचार	13–14
योग विशेष	15–16
खेल विशेष	17–18
नवाचार	19
शिक्षण तकनीक	20–21
बाल फिल्म समीक्षा	22–23

संयुक्त परिवार की विलुप्त होती परम्परा

शिक्षण संवाद

''विलुप्त'' एक ऐसा शब्द है, जो किसी चीज की समाप्ति का संकेत देता है। समय रहते चेतकर हम उसको बचाकर लाभान्वित हो सकते हैं। इसी के अन्तर्गत आता है हमारा संयुक्त परिवार जो धीरे–धीरे समाप्ति की ओर जा रहा है।

बदलते सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक मानदण्डों के कारण ही संयुक्त परिवारों की परम्परा में व्यवधान आया और एकल परिवार की ऐसी व्यवस्था का प्रादुर्भाव हुआ, जिसमें स्वतन्त्रता, स्वच्छन्दता और आर्थिक तरक्की तो मिली लेकिन दिलों में दूरियाँ और प्रतिद्वन्द्विता जैसे कुभावों को भी खूब बल मिला। अस्सी के दशक तक तो संयुक्त परिवारों की परम्परा खूब इठलायी, उसके बाद दिनोंदिन इसमें ह्रास आया, जिसकी भरपाई बड़ों के साथ–साथ बच्चों को भी करनी पड़ रही है। संयुक्त परिवार में बच्चे प्यार, अनुशासन तथा मेल–जोल के भाव बिना पढ़ाए पढ़ लेते थे। विद्यालयों में दादी–नानी उत्सव तो नहीं मनाये जाते थे, फिर भी बच्चों का दादी–नानी के साथ अटैचमेंट बड़ी गहराई तक रहता था। उन्हें उनकी सुविधाओं का ख्याल रहता तथा उनकी समस्याओं को घर के सदस्यों तक भी पहुँचाते थे।

पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण संयुक्त परिवार के ह्रास का एक और प्रमुख कारण है। व्यक्ति भौतिकता की अंधी–दौड़ में दिन–रात लगा रहता है, रिश्ते–नातों सम्बन्धों को दरकिनार कर उपयोगिता के आधार पर सम्बन्ध गढ़ता है।

शिक्षा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम बच्चों को नैतिक सन्देश देकर आदर, सम्मान, प्रेम, सहयोग आदि का भाव बड़े ही सहज तरीके से सिखा सकते हैं और खोयी विरासत को वापस पा सकते हैं–

निर्मल तन हो, निर्मल मन हो,
संस्कारित पूरा जीवन हो।।
दसों दिशाएँ रोशन हों,
मन उपवन–सा महके।
पाकर अच्छी शिक्षा,
बच्चा–बच्चा चहके।।

सरिता तिवारी
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय कन्दैला,
विकास खण्ड–मसौधा, जनपद–अयोध्या।

बेसिक शिक्षा के अनमोल रतन

जाकिर अली खां

कम्पोजिट स्कूल मामूरगंज, कादरचौक, बदायूं , उत्तर प्रदेश

विद्यालय को उत्कृष्ट बनाने के प्रयासः–

– स्टाफ से बेहतर व सहयोगात्मक संबंध

– अविभावकों व ग्रामवासियों का पूर्ण सहयोग विद्यालय हित में मिलना,

– समस्त विद्यालय स्टाफ का तन मन और धन से विद्यालय हितों में सदैव सोचना

– काफी गणमान्य व्यक्तियों द्वारा विद्यालय का आर्थिक सहयोग व श्री सुभाष चंद्र तथा श्री देवेन्द्र कुमार द्वारा विद्यालय के लिए श्रम दान।

किए गए प्रयासों का परिणामः–

विगत पांच वर्षों से नामांकन उत्तरोत्तर बढ़ा है जोकि पांच वर्ष पूर्व 353 था जो वर्तमान में 471 है, समस्त विद्यालय स्टाफ विशेषकर श्रीमती स्मृति परमार जी के द्वारा नवाचारों के कारण विद्यालय व शिक्षा के प्रति बच्चों का आकर्षण बढ़ने से पहले की अपेक्षा उपस्थिति बहुत बेहतर लगभग 81 प्रतिशत है। विद्याज्ञान,नवोदय विद्यालय की प्रवेश परीक्षाओं में तथा राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्र वृति प्रवेश परीक्षा में अब तक विद्यालय के लगभग आधा दर्जन बच्चों ने सफलता पाई है।

विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ :–

विभिन प्रतियोगी परीक्षाओं में लगभग आधा दर्जन छात्र छात्राओं को उनकी सफलता प्राप्ति पर **BRC** स्तर, विद्यालय स्तर तथा ग्राम स्तर पर सम्मानित व पुरस्कृत किया गया।

गतिविधियाँ :–

समस्त स्टाफ के द्वारा संदर्शिकाओं व विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए तथा स्व निर्मित **TLM**, शिक्षण योजना व पाठ योजना का उपयोग करके आकर्षक तथा उपयोगी गतिविधियों के द्वारा शिक्षण कार्य करना। श्रीमती स्मृति परमार सहायक अध्यापक, श्रीमति परवीन बेगम, श्रीमती वंदना शर्मा, श्री राम निवास तथा अन्य स्टाफ द्वारा बच्चों को आवश्यक अवसरों पर आकर्षक सांस्कृतिक, सामाजिक व खेलकूद गतिविधियां कराई जाती हैं जिससे बच्चों में शिक्षा व विद्यालय के प्रति आकर्षण उत्पन्न होता है।

शिक्षकों और विद्यालय की उपलब्धियाँः–

मेरे अर्थात जाकिर अली खां द्वारा चार सत्र लगातार जिला स्तर पर शिक्षक दिवस के अवसर पर जिला प्रशासन द्वारा उत्कृष्ट शिक्षक का सम्मान हासिल करना तथा अन्य **NGOs, DIET** बदायूं व **BRC** कादरचौक द्वारा विभिन्न अवसरों पर सम्मान प्राप्त करना तथा बच्चों के लिए शैक्षिक काव्य लेखन करना। बच्चों व विद्यालय की भौतिक निपुणता के कारण विद्यालय का **P M SHRI** योजना में चयन श्रीमती स्मृति परमार (**AT**) द्वारा विभिन्न इवेंट्स में राज्य स्तरीय पुरस्कार तथा राज्य स्तर पर पाठ योजना का चयन।

आकर्षक TLMs का निर्माण

विद्यालय यूट्यूब चौनल **ZED MENTOR** पर विद्यालय में हुई गतिविधियों की विडियोज को अपलोड किया गया। विद्यालय स्टाफ के द्वारा तरह–तरह के नवाचारों का सृजन कर बच्चों के साथ करना व वीडियो बनाकर संसार में अन्य बच्चों व शिक्षकों के हितार्थ यूट्यूब पर अपलोड करना होता है।

https://m-facebook-com/story-php\story_fbid¾pfbidOpWvFWdkBVupCmkW8YGwEWvugZdmSÛmso4KhSqcFzz71uscnCiPq8Uqkk8p1mDRNRI&id¾100069042482506&mibeÛtid¾Nif5oz

मिशन शिक्षण संवाद के लिए संदेशः–

मिशन को संदेश देना ऐसा है जैसे सूरज को रोशनी दिखाना, फिर भी एक मशवरा देना चाहूंगा कि वैसे तो मिशन अपने आप को बहुत अधिक हाईलाइट नहीं करता फिर भी इस ध्येय के साथ कि अधिक से अधिक साथियों के पास मिशन के सभी स्तंभों की जानकारी पहुंचे, मिशन को बहुत अधिक गैप न देकर कार्यशाला का आयोजन करना चाहिए।

शिक्षक समाज के लिए संदेश :–

प्रिय साथियों से मैं कहना चाहूंगा कि मिशन ने अपने को दर्पण बनाकर हम टीचर्स के सामने रख दिया है जो चाहे इस दर्पण को सामने रख कर अपने आप को शैक्षिक, सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से संवार ले।

संकलन – सचिन सक्सेना
टीम मिशन शिक्षण संवाद बदायूँ
https://shikshansamvad.blogspot.com/2023/09/blog-post_14.html

निन्दक नियरे राखिए

कुछ चर्चा बेसिक शिक्षा को बेहतर बनाने की...

शिक्षण संवाद

कबीरदास जी द्वारा कही गयी ये पंक्तियां समाज को सुंदर संदेश देती है। समाज को जागरूक रखती है।

निंदक नियरे राखिये अर्थात हमें हमेशा अपनी निंदा करने वाले को अपने समीप ही रखना चाहिए जिससे वह हमें हमारे अवगुण बताए और हमें अपने अवगुण ठीक करने का अवसर मिले। एक शिक्षक होने के नाते हमारे सामने यदा कदा ये प्रसंग आते रहते हैं कि जैसे समाज में शिक्षक को कभी कभी तिरस्कार का सामना करना पड़ता है ,कुछ आलोचना व समालोचना झेलनी पड़ती है लेकिन हमें इन सब बातों से ऊपर उठ कर अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर रहना चाहिए।समाज की छोटी मोटी बातों से पथ भ्रमित नही होना है। शिक्षण का जो उद्देश्य है बडा ही पावन कार्य है।

हमको शिक्षा देते रहना है निंदा से बिल्कुल नही घबराना है ।बल्कि आलोचना जिस बात को लेकर है उसमे सुधार की गहन आवश्यकता है इस विचार पर कार्य करें।

आलोचक समकक्ष रखें,आंगन कुटी छवाये, आलोचना से बिन डरे,निर्मल करे सुभाए। आलोचना से हीरे मोती बनते है, इससे मिलती अच्छी सीख, सही रास्ते हम चलते है। क्या करना है क्या नही करना? इससे हमको सीखना है सही मार्ग और सही दिशा का ,ज्ञान इसी से करना है।

चंचल उपाध्याय
प्राथमिक विद्यालय कोट,बिसौली
जनपद–बदायूँ

मिशन गीत

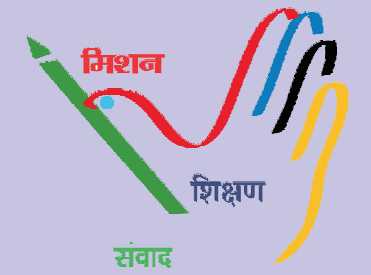

प्रहलाद सिंह
सहायक अध्यापक,
उ0 प्रा0 विद्यालय घाट–लहचूरा,
विकास खण्ड–मऊरानीपुर,
जनपद–झाँसी।

मिशन हमारा अजब हमेशा,
करता कार्य सदा ये।
जीवन की गरिमा को रखे,
ऊँचा भाल सदा ये।।

न्यारी इसकी कार्य प्रणाली,
न्यारे इसके ढंग हैं।
विविध भाँति से शिक्षा देता,
सतरंगी से रंग हैं।।

दैनिक नैतिक, काव्यांजलि,
और विचार शक्ति अपनाता।
पढ़ें बाल–जिज्ञासा जो भी,
मन ही मन मुस्काता।।

धारा काव्य की अविरल बहती,
काव्य–मंजरी कहती।
तुम्हें देश के रंग–ढंग,
बतलाते, संग चलती।।

शिक्षण कार्यों की सामग्री,
रोज यहाँ से चलती।
होते सुबह सभी स्कूलों,
में जाकर के रुकती।।

खेल–खेल और गतिविधियों,
संग शिक्षा दें अध्यापक।
कविता, गीत, कहानी से ये,
सभी जगह है व्यापक।

TLM का नाम - संज्ञा

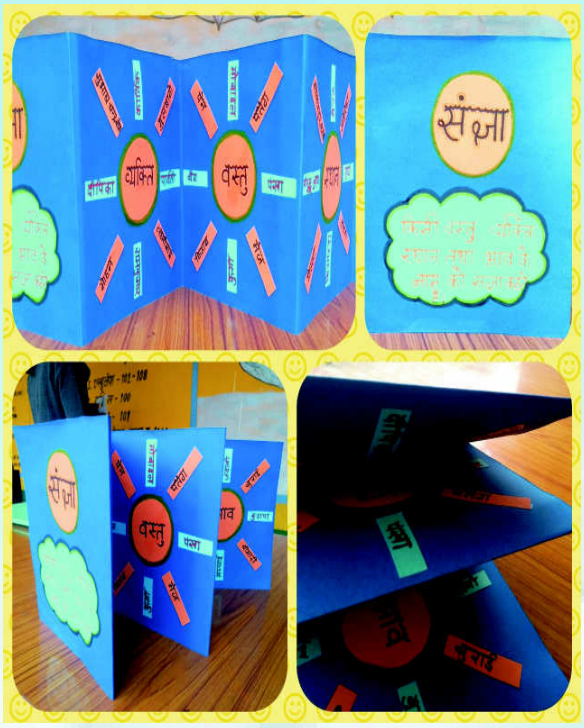

प्रयुक्त सामग्री- कलरफुल पेस्टल शीट, स्केच पेन, कैंची, ग्लू

निर्माण विधि- सबसे पहले अपने पसंद के कलर की pastel शीट को लेकर उसको उसको लंबे आकार में काट लेंगे फिर बराबर–बराबर दूरी लेकर चार फोल्ड करेंगे। फिर सबसे ऊपर वाले पृष्ठ पर अलग शेप के पेस्टल शीट से अपने मनपसंद आकार काटकर उसको चिपका लेंगे और संज्ञा की परिभाषा लिखेंगे उसके अंदर वाले अंदर वाले फोल्डर में बीच में गोल तथा **stripes** बनाकर अपने मनपसंद कलर से संज्ञा के अलग–अलग प्रकार के बारे में लिखेंगे और उदाहरण भी लिखेंगे।

उपयोगिता–

1. बच्चे संज्ञा के बारे में जानेंगे।
2. संज्ञा के प्रकार के बारे में समझेंगे।
3. अलग–अलग संज्ञा के उदाहरण से स्पष्टता आएगी ।
4. कलरफुल टीएलएम से रोचकता के साथ पढ़ेंगे।

शिल्पी गुप्ता
सहायक अध्यापक,
उ0 प्रा0 विद्यालय सालारपुर कलां कंपोजिट्,
विकास खण्ड– दादरी,
जनपद –गौतम बुद्ध नगर।

श्यामपट्ट कौशल

शिक्षण संवाद

विषय– भाषा (हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी) चित्रकला
कक्षा– 6,7,8

उद्देश्य– श्यामपट्ट पर लिखने का अवसर विद्यार्थियों को भी देना चाहिए जिससे उनके मनोबल में वृद्धि हो सकें।
सामग्री– श्यामपट्ट ,चॉक,डस्टर, पुस्तक आदि।

यह कार्य रोचक गतिविधि के द्वारा प्रत्येक बच्चे को अवसर देते हुए बच्चों के मनपसंद विषय और मनपसंद टॉपिक कराते हुए बच्चों की रुचि का ध्यान रखना चाहिए। विद्यार्थियों को भयमुक्त वातावरण देना चाहिए। हर समय बच्चों की सहायता के लिए शिक्षक को तैयार रहना चाहिए।
जैसे–श्यामपट्ट पर विद्यार्थी कविता लिखें अथवा कोई चित्र बनाएँ तो पहले छात्रों को मौखिक रूप से कह दिया जाए और श्यामपट्ट पर लिखते समय शिक्षक को उसे मौखिक रूप से दोहराते और समझाते रहना चाहिए जिससे विद्यार्थी सक्रिय रहें और कक्षा अनुशासन में रहें साथ ही साथ बच्चे की रूचि में वृद्धि हो और उसका मनोबल बढ़े।
नोट– श्यामपट्ट का आविष्कार सर्वप्रथम जेम्स विलियम ने किया था। विधिपूर्वक उपयोग पाठ को प्रभावशाली बनाने में सहायक होता है।

लाभ– 1– बच्चों द्वारा श्यामपट्ट पर कार्य पाठ को रोचक बनाता है और छात्रों को पाठ्य विषय को समझाने में सहायक सिद्ध होता है।
2– बच्चों का मनोबल बढ़ता है।
3– तेज बच्चों के साथ कमजोर बच्चे भी सीखने में सफल।
4– बच्चों की शिक्षा में रुचि बढ़ती है।

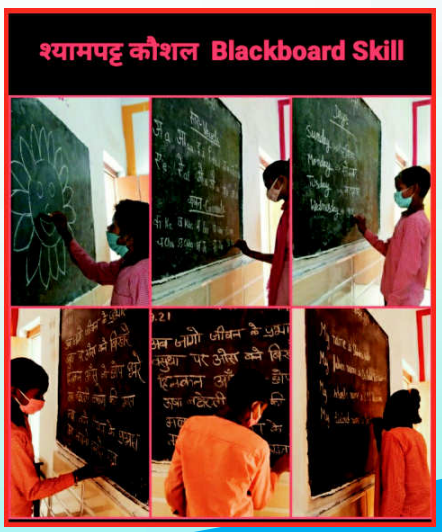

शमा परवीन
अनुदेशक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय टिकोरा,
विकास खण्ड–तजवापुर,
ज्नपद–बहराइच।

पहले की अपेक्षा बहुत बदलाव

शिक्षण संवाद

भारतीय समाज एक पितृसत्तात्मक समाज है। किन्तु यह भी कहना अनुचित न होगा कि आज के समय में महिलाएँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। हर काम में बराबर सहभागिता है उनकी। हर क्षेत्र में पुरुषों को चुनौती दे रही हैं। पहले की अपेक्षा बहुत बदलाव हो गया है। लोगों की सोच एवं उनके व्यवहार में। लेकिन अभी भी लोगों की मानसिकता में पूर्णतया बदलाव नहीं हो पाया है। जिसके चलते अक्सर महिलाओं को भाँति–भाँति की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। महिलाओं के विषय में एक उक्ति कही गयी है 'नारी माता अस्ति, नारी भगिनी अस्ति, नारी कन्या अस्ति' अर्थात संसार में नारी ही माँ के रूप में, नारी ही बहन के रूप में व नारी ही पुत्री के रूप में और भी कई किरदारों में वह अपने कर्तव्य का पालन करती हुई पायी जाती है।

पहले की अपेक्षा में आज बहुत सारे बदलाव हो रहे हैं। जहाँ पहले महिलाओं पर अनेक पाबन्दियाँ थीं, वहीं आज वे हर क्षेत्र में आगे बढ़कर पुरुषों के साथ बराबर का सहयोग कर रही हैं, फिर चाहें वो स्पेस में हो, बॉर्डर पर हो या शिक्षा के क्षेत्र में। यदि बात शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका की करी जाए तो जब से महिलाओं का योगदान शिक्षा के क्षेत्र में हो रहा है तब से शिक्षा में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन हुए हैं। जहाँ एक ओर महिलाओं पर अपने घर परिवार की जिम्मेदारी होती है वहीं दूसरी ओर विद्यालय की जिम्मेदारी होती है। अपने बेहतर मैनेजमेंट के द्वारा और कार्यकुशलता के बल पर उन्होंने अपने घर व विद्यालय दोनों की जिम्मेदारियों को बखूबी निभाती हैं और आज यदि देखा जाए तो अधिकतर ऐसे विद्यालय जहाँ पर महिलाओं की जिम्मेदारी है, वो नित नए–नए आयाम स्थापित कर रहे हैं।

महिलाओं के शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश के कारण बालिकाओं की शिक्षा पर खासा प्रभाव देखने को मिला है। यही नहीं उनके नामांकन पर भी इसका विशेष प्रभाव दृष्टिगत हुआ है। महिला शिक्षक होने के कारण बालिकाएँ खुलकर अपनी बात व समस्याएँ कह पाती हैं और समस्याओं को समझने व उनके उचित निदान के द्वारा शिक्षिकाएँ उनका बेहतर मार्गदर्शन भी करती रहती हैं। आज बहुत सी ऐसी शिक्षिकाएँ हैं जिनको दोहरे किरदार में रहना पड़ता है अर्थात जहाँ एक ओर अपने परिवार की देखभाल– सुबह जल्दी उठना, बच्चों को रेडी करना, नाश्ता तैयार करना व घर के अन्य समस्त काम करना, वहीं दूसरी ओर स्वयं रेडी होकर विद्यालय जाना। इन दोनों किरदारों क वो बखूबी पालन भी करती हैं।

बात यदि परिषदीय विद्यालयों की करी जाए तो कुछ विद्यालयों में प्रसाधन के लिए उचित प्रबन्ध तक नहीं हैं। जिससे शिक्षिकाओं को अक्सर समस्याओं से दो चार होना पड़ता है। हालाँकि अब पहले से अधिक सुविधाएँ होती जा रही हैं। अधिकतर स्कूलों में प्रसाधन की उचित व्यवस्था भी हो रही है। इस लिहाज से महिला शिक्षकों की सहूलियत बढ़ती जा रही है। फिर भी अभी समस्त विद्यालयों में ऐसा नही हो पाया है।

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि समाज में भाँति–भाँति की समस्याओं के बावजूद महिलाएँ अपने कर्तव्यों का बखूबी पालन करती हुई हर क्षेत्र में अपने आप को स्थापित कर रही हैं और विद्यालयों में बतौर शिक्षिका उनके द्वारा अद्वितीय कार्य किया जा रहा है। महिलाओं के सम्बंध में कहा गया है– 'नारी मस्य सामजस्य कुशल वास्तुकाराय अस्ति' अर्थात नारी हमारे समाज की कुशल वास्तुकार हैं।

रूमी गम्भीर,
सहायक शिक्षिका,
कम्पोजिट विद्यालय इटैली,
विकास खण्ड–हथगाम, जनपद–फतेहपुर।

तोता मैना

शिक्षण संवाद

एक जंगल में तोता मैना रहते थे। वह रोज एक बाग में जाकर आम खाते थे। धीरे–धीरे सभी पक्षियों को पता चल गया तो वे भी उस बाग में जाने लगे। वे सब आम खाते और नीचे गिरा देते। इससे तो बाग के मालिक को बहुत नुकसान होने लगा। पहले केवल तोता मैना ही बाग में आते हैं, उससे बाग के मालिक को कोई एतराज नहीं था, लेकिन अब वह क्या करें? उसने बाग के फलों की रक्षा के लिए एक माली नियुक्त कर दिया। माली दिन भर बाग की देखभाल करता और सभी आने वाले पक्षियों को वहाँ से भगा देता। अब तोता मैना सोचने लगे कि यह तो बहुत बुरा हुआ। ये पक्षी आम भी खाते हैं और नीचे गिराकर मालिक का नुकसान भी करते हैं और इनके कारण हम भी बाग में नहीं जा पाते हैं। धीरे–धीरे तोता मैना ने उस बाग में जाना बंद कर दिया। सभी पक्षी भी भोजन न मिलने से बाग में जाने से वंचित हो गये। जब सब पक्षियों ने बाग में जाना बंद कर दिया तो तोता मैना फिर से उस बाग में जाने लगे। बाग का माली उनको जब वहाँ से भगाने लगा, तब तोते ने माली से कहा कि–'ऐ माली! मुझे क्यों बाग से भगा रहे हो?'

माली बोला–'देख तोते! तुम्हारे कारण हमारे मालिक का बहुत नुकसान हुआ। अब तुम बाग में मत आया करो।'

तोता बोला–'लेकिन अब तो अन्य पक्षियों ने यहाँ आना बंद कर दिया। फिर क्यों..?'

माली बोला– 'तुम्हारे ही कारण वह बाग में आये और अगर फिर तुम्हें देखकर यहाँ आने लगे तो मैं मालिक को क्या जवाब दूँगा, जिसके कारण उन्होंने मुझे यहाँ रखा है।' इस पर मैना बोली–'माली! तो आप ही बताइए कि मैं क्या करूँ, अगर मैं यहाँ नहीं आऊँगी तो क्या खाऊँगी? मुझे केवल इसी बाग का आसरा है। हम लोग यहाँ हमेशा से आ रहे हैं।'

माली कुछ देर सोचने के बाद बोला–'इसका एक उपाय है?' तोता मैना झट से बोले–'वह क्या?' माली ने कहा–'मैं तुम्हारे पास प्रतिदिन आम भेज दिया करूँगा, जिससे तुम लोग भूखों नहीं मरोगे।' तोता मैना बोले–'जब आम लगने बंद हो जाएँगे तब..?' माली बोला–' हे तोता मैना! तुम लोग चिंता मत करो! जिस मौसम में जो भी फल लगेंगे, मैं उन्हें तुम्हारे पास भेजता रहूँगा। 'अब तोता मैना बहुत खुश थे। उन्होंने माली को धन्यवाद दिया और वहाँ से चले गये। माली अपने कहे वचन के अनुसार उनके पास प्रतिदिन फल भेजने लगा।

शिक्षा–

हमें हमेशा सूझ–बूझ से कार्य करना चाहिए, इसमें बड़ी से बड़ी समस्याएँ हल हो जाती हैं।

अनिल सिंह,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय बम्हौरी,
विकास खण्ड–मऊरानीपुर,
जनपद–झाँसी।

किताबें होतीं अनमोल

किताबें होतीं बड़ी अनमोल,
नहीं है कोई इनका मोल।
जो भी इनमें मन लगा ले,
वो अनमोल ज्ञान को पा ले।।
न जाने कितना खजाना छुपा,
रहता है इन किताबों में।
पढ़ लेता है जो ठीक से हमको,
लग जाता है भविष्य सजाने में।।

मोबाइल की दुनिया में आकर,
हम इस खजाने से दूर हो रहे है।
न जाने कितने बच्चों के भविष्य,
अनजाने ही चकनाचूर हो रहे हैं।।

समय आ गया है हम नई पीढ़ी को,
किताबों का महत्व बताएँ।
बच्चे सीखें किताबों से संस्कार,
और सुंदर अपना भविष्य बनाएँ।।

किताबों की दुनिया में आकर,
बच्चे सही गलत को जानेंगे।
शिक्षा के पंख लगा कर वे,
उज्ज्वल भविष्य को पा लेंगे।।

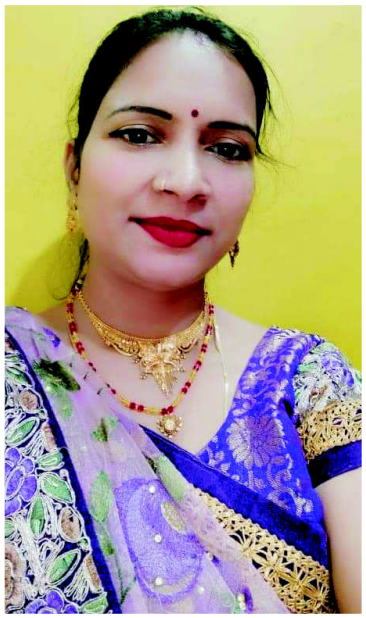

मृदुला वर्मा
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय अमरौधा प्रथम,
विकास खण्ड–अमरौधा,
जनपद–कानपुर देहात।

स्वामी रामतीर्थ

ओजस्वी वक्ता, श्रेष्ठ लेखक, आदर्श गणितज्ञ, प्रज्ञावान महान संत, कवि, शिक्षक, महान समाज सुधारक की भूमिका निभाने वाले महान संत रामतीर्थ का जन्म 22 अक्टूबर 1873 में पंजाब के गुंजरवाला क्षेत्र में हीरानंद जी के यहाँ हुआ था। स्वामी जी बाल्यकाल से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। अध्यात्म उनके जीवन में था। धर्म ग्रंथ पढ़ने के शौकीन स्वामी जी के जीवन पर स्वामी विवेकानंद और द्वारिका पीठ के शंकराचार्य का विशेष प्रभाव था। अपने आध्यात्मिक एवं क्रांतिकारी विचारों से भारतीयों को ही नहीं वरन अमेरिका और जापान के लोगों को भी प्रभावित किया और विदेशों में भी भारत का नाम रोशन किया। स्वामी रामतीर्थ हिन्दी भाषा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने कहा कि हिन्दी में ही कार्य प्रचार करो, वही स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा होगी। विदेशों में उनके विचारों व ओजस्वी वाणी का डंका बजता था। वे जापानियों की कर्मनिष्ठा व परिश्रमशीलता के कायल थे। जापान प्रवास के दौरान की एक घटना है – एक दिन स्वामी रामतीर्थ जापान में नारायण स्वामी के साथ टहल रहे थे। तब नारायण स्वामी ने उनसे कहा, 'स्वामी जी उस व्यक्ति को अपने ज्ञान पर बहुत अहंकार है। वह अपने समान किसी को कुछ नहीं समझता। स्वामी जी ने उन्हें बीच में रोकते हुए कहा, ''नारायण दूसरों की बुराई करना किसी के लिए मन में दुर्भावना रखना, अपमानजनक निंदापूर्ण व्यवहार नहीं, बल्कि उसके उज्ज्वल पक्ष व श्रेष्ठ गुणों को ही देखना चाहिए। उसके चरित्र के उज्ज्वल पक्ष को देखना ही अच्छा होता है। बुद्ध ने भी अपने शिष्यों से कहा था कि 24 घंटे राह पर कोई दिखे, तो उसके मंगल की कामना करना, वृक्ष मिल जाए तो उसके विषय में भला सोचना, पहाड़ के पास से गुजरो तो उसके विषय में सुविचार ही रखो। शिष्य ने जब पूछा कि इससे क्या लाभ होगा? उन्होंने कहा, ''जब तुम मंगल कामना करोगे, तो गाली देने का अवसर ही तुम्हें नहीं मिलेगा और तुम्हारी मंगल कामना की प्रतिध्वनि उसके दिल में होगी अर्थात वह भी तुम्हारे लिए मंगल कामना करेगा। हम अपने मन में जैसे विचार दूसरों के लिए रखते हैं, वह भी वैसे ही विचार अपने मन में आपके लिए रखता है।" उनके जीवन से हमें सीख मिलती है कि उपलब्धियाँ हासिल करने के लिए उम्र नहीं इच्छा शक्ति मायने रखती है।

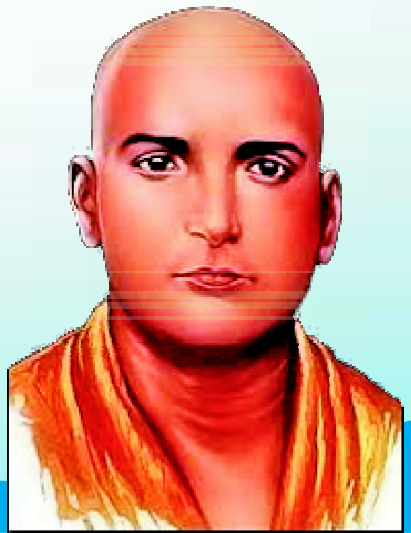

श्रीमती शुभा देवी,
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय अमौली (1–8),
विकास खण्ड–अमौली, जनपद–फतेहपुर।

सरदार वल्लभ भाई पटेल

शिक्षण संवाद

देश को एक सूत्र में पिरोने का सपना देखने वाले, देश के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले सरदार पटेल जी को हम कई रूपों में देखते है। आजाद देश को विशाल भारत देश बनाने में अपनी अहम भूमिका निभाने वाले, देश के प्रथम प्रधानमंत्री, प्रथम गृहमंत्री, स्वतंत्रता सेनानी व राष्ट्रीय सम्मान 'भारत रत्न' प्राप्त पटेल जी का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को ननिहाल में गुजरात के नाडियाड में हुआ था। वह खेड़ा जिले के कारमसद में रहने वाले झावेर भाई पटेल जी की चौथी संतान थे। उनकी माता का नाम लाडवा पटेल था। पटेल जी वर्ग भेद और वर्ण भेद के कट्टर विरोधी थे। उनका कहना था कि हम भारतीयों को अब भूल जाना चाहिए कि वह हिन्दू है, मुस्लिम है या फिर सिख। उन्हें सिर्फ याद रखना चाहिए कि वह एक भारतीय हैं। उनका कहना था कि जाति धर्म को तेज़ी से भूलना होगा, तब जाकर देश विकास के राह में तेजी से आगे बढ़ेगा। उनका एक और सपना था कि भारत एक अच्छा आत्मनिर्भर देश बने। जिससे देश मे कोई भूखा ना रहे और भोजन के लिए कोई आँसू न बहाए। उनके कुछ सदविचार इस प्रकार हैं–

1. 'इस मिट्टी में कुछ अनूठा है, जो कई बाधाओं के बावजूद हमेशा महान आत्माओं का निवास रहा है।'
2. 'आज हमें ऊँच–नीच, अमीर–गरीब, जाति–पंथ के भेदभावों को समाप्त कर देना चाहिए।'
3. 'शक्ति के अभाव में विश्वास व्यर्थ है, विश्वास और शक्ति, दोनों किसी महान काम को करने के लिए आवश्यक हैं।'
4. 'मनुष्य को ठंडा रहना चाहिए, क्रोध नहीं करना चाहिए। लोहा भले ही गर्म हो जाए, हथौड़े को तो ठंडा ही रहना चाहिए अन्यथा वह स्वयं अपना हत्था जला डालेगा। कोई भी राज्य प्रजा पर कितना ही गर्म क्यों न हो जाए, अंत में तो उसे ठंडा होना ही पड़ेगा।'
5. 'आपकी अच्छाई आपके मार्ग में बाधक है, इसलिए अपनी आँखों को क्रोध से लाल होने दीजिए और अन्याय का सामना मजबूत हाथों से कीजिए।'
6. 'अधिकार मनुष्य को तब तक अंधा बनाये रखेंगे, जब तक मनुष्य उस अधिकार को प्राप्त करने हेतु मूल्य न चुका दे।'
7. 'आपको अपना अपमान सहने की कला आनी चाहिए।'
8. "मेरी एक ही इच्छा है कि भारत एक अच्छा उत्पादक हो और इस देश में कोई अन्न के लिए

आँसू बहाता हुआ भूखा ना रहे।"

9. "जब जनता एक हो जाती है, तब उसके सामने क्रूर से क्रूर शासन भी नहीं टिक सकता। अतः जात–पाँत व ऊँच–नीच के भेदभाव को भुलाकर सब एक हो जाइए।"

10. "संस्कृति समझ–बूझकर शांति पर रची गयी है। मरना होगा तो वे अपने पापों से मरेंगे। जो काम प्रेम, शांति से होता है, वह बैर–भाव से नहीं होता।"

राजीव कुमार सिंह,
सहायक अध्यापक, कंपोजिट विद्यालय अखरी,
विकास खण्ड–हथगाम, जनपद–फतेहपुर।

योग का परिचय व इस शब्द की व्युत्पत्ति

शिक्षण संवाद

योग संसार के समस्त मानवों के लिए एक बेहद ही महत्वपूर्ण उत्पत्ति है। योग एक ऐसी संकल्पना है जिससे बेहतर संकल्पना आज तक मनुष्य के पास नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर योग होता है। कुछ लोगों के अंदर जागृत अवस्था में तथा कुछ के अंदर सुषुप्त अवस्था में होता है। योग वह क्रिया है जो मनुष्य के अन्दर सुषुप्तावस्था में अंतर्निहित शक्तियों को जागृत करने का कार्य करती है। योग इतना अधिक प्रभावी होता है कि इसके नियमित रूप से करने से मनुष्य की बुद्धि और बल दोनों सकारात्मक रूप से वृद्धि करते हैं।

योग का शाब्दिक अर्थ– जुड़ना, मिलना या संयुक्त होना होता है। जब आत्मा परमात्मा के साथ संयुक्त हो जाती है तो यह अवस्था समाधि की अवस्था की ओर गतिमान होती है और यही योग कहलाता है। यदि व्यक्ति को शरीर विज्ञान की बेहतर जानकारी रहती है तो वह बेहतर स्वास्थ्य और दीर्घायु से लाभान्वित होता है और इन सब के कारण हम धनसंपदा को अर्जित करते हुए आनंद का भोग करते हैं। यही नहीं यदि हमें योग की अच्छी जानकारी हो तो हम उन सभी शक्तियों को प्राप्त कर सकते हैं, जो मन की शक्ति के द्वारा प्राप्त होते हैं।

हालाँकि मन सभी के पास होता है किन्तु इस मन का प्रयोग केवल और केवल योग के द्वारा ही सम्भव है। आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए योग एक आवश्यक विधा होती है। मनुष्य के द्वारा अपनी चेतना व अस्तित्व का बोध करना, अपने अन्दर की शक्तियों को विकसित करना और परब्रह्म परमात्मा से साक्षात्कार करते हुए उसी में विलीन हो जाना और परम आनन्द को प्राप्त करना ही योग होता है। योग कोई नई विद्या नहीं है अपितु यह बहुत ही प्राचीन व मनुष्य के लिए आवश्यक विद्या है। इसे साधना, मोक्ष का साधन व जीवन जीने की कला के रूप में भी जाना जाता है। ऋषि मुनि इस विद्या का प्रयोग बहुत समय पहले से करते आ रहे हैं। महर्षि पतंजलि के द्वारा योग विद्या को व्यवस्थित करते हुए योगसूत्रों की रचना की और योग विद्या को क्रमिक रूप से प्रस्तुत किया जिसे हम सब योगदर्शन के रूप में जानते हैं।

योग की खोज किसने की इस सम्बन्ध में मतभेद है अर्थात अभी तक यह नहीं तय हो पाया है कि योग की खोज किसके द्वारा की गई है। कोई पतंजलि को योग का खोजकर्ता बताता है तो कोई याज्ञवल्क्य को, कोई परमर्षि मुनि को इसका खोजकर्ता बताता है तो कोई हिरण्यगर्भ को। योग को एक ऐसी विद्या कहा जाता है जिसका ज्ञान हो जाने के बाद यह समझा जा सकता है कि व्यक्ति किसी भी चीज से अंजान नहीं है अर्थात उसे सभी विषयों व वस्तुओं की जानकारी है। योग विद्या बहुत ही पुरानी विद्या है। इसकी प्राचीनता का पता श्रीमद्भगवतगीता से ही लगाया जा सकता है। श्रीमद्भगवतगीता के प्रत्येक अध्याय का नाम किसी न किसी योग के नाम पर ही रखा गया है। कुछ विद्वान योग का प्रारम्भ सैन्धव सभ्यता के समय से ही मनाते हैं। इसका आधार जॉन मार्शल के द्वारा उनकी पुस्तक में मोहनजोदड़ो से प्राप्त अवशेषों में योग की मुद्रा में प्राप्त नरदेवता की मूर्ति हैं। इसके आधार पर यह माना जाता है कि योग का आविर्भाव सैन्धव सभ्यता के समय से ही हुआ।

गीता महाभारत का ही एक अंग है और यह बहुत ही महत्वपूर्ण भाग है। इसे यदि योग ग्रन्थ कहा जाए तो गलत नहीं होगा क्योंकि गीता के प्रत्येक अध्याय के साथ योग शब्द जुड़ा हुआ है और योग की विभिन्न पद्धतियों में गीता का वर्णन किया गया है। विवेकानन्द जी के द्वारा श्रीमद्भगवतगीता को उपनिषद रूपी बगिया मे से चुने हुए आध्यात्मिक पुष्पों से गुथा हुआ पुष्पगुच्छ कहा गया है।

योग के सम्बन्ध में यह एक अन्य अवधारणा है कि जिस व्यक्ति का मन उसके वश में नहीं होता है उसके लिए योग दुष्कर होता है और मन यदि वश में होता है तो योग को बड़ी ही सहजता से प्राप्त कर लेते हैं। जैन दर्शन के अनुसार भी योग एक बहुत ही महत्वपूर्ण विद्या होती है। इसके अनुसार ऐसे समस्त साधन जिससे आत्मा की शुद्धि होती है, योग कहलाते हैं। जैन दर्शन में पंच महाव्रत का पालन आवश्यक होता है और ये पाँचों योगदर्शन में यम के रूप में वर्णित हैं। बौद्ध दर्शन के अनुसार योग मोक्ष प्राप्ति का मुख्य आधार है। इसमें भी मोक्ष प्राप्ति के लिए विभिन्न प्रकार के साधनों व पद्धतियों का वर्णन किया गया है। बौद्ध दर्शन में मोक्ष को निर्वाण नाम दिया गया है।

इस प्रकार से उपरोक्त तथ्यों व चर्चाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि योग एक अतिप्राचीन विद्या है जिसके मध्यम से व्यक्ति अपने मन को शान्त रखते हुए अपने अन्दर निहित शक्तियों को जागृत कर सकता है और योग के माध्यम से मन की शान्ति की प्राप्ति भी की जा सकती है।

बबलू सोनी,
सहायक शिक्षक,
प्राथमिक विद्यालय उतरार,
विकास खण्ड–बाबागंज,
जनपद–प्रतापगढ़।

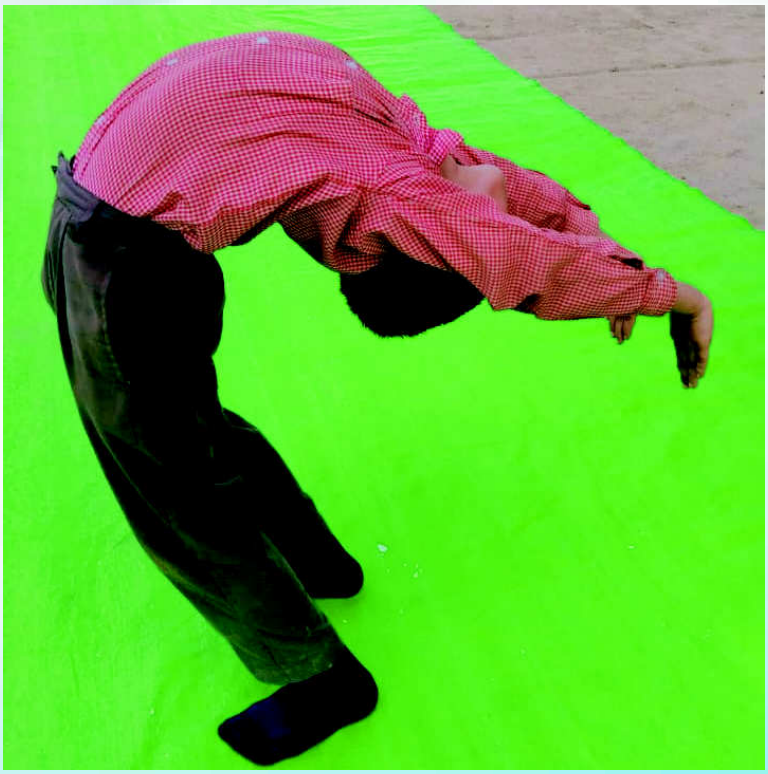

भारोत्तोलन

शिक्षण संवाद

भारोत्तोलन एक बहुत ही प्रचलित खेल है। यह खेल ओलम्पिक में भी शामिल किया गया है। यह एक ऐसी प्रतियोगिता है जिसमें खिलाड़ी के द्वारा अपनी ताकत का प्रदर्शन किया जाता है अर्थात यह प्रतियोगिता किसी खिलाड़ी के द्वारा अपनी ताकत के प्रदर्शन की प्रतियोगिता है। भारोत्तोलन की यह प्रतियोगिता दो प्रकार की होती है। पहली प्रतियोगिता को हम स्नैच के नाम से जाने जाते हैं। इसमें भार को खिलाड़ी अपने सिर के ऊपर तक उठाता है और दूसरी प्रतियोगिता क्लीन एंड जर्क के नाम से जानी जाती है। इसमें भार को दो भाग में उठाया जाता है। भारोत्तोलन के बेहतरीन खिलाड़ियों में से अधिकतर खिलाड़ी अपने वजन से 3 गुना तक भार उठा लेते हैं। चूँकि यह खेल खिलाड़ी की शारीरिक शक्ति पर निर्भर करता है इसलिए उसे मानसिक रूप से स्वस्थ रहना भी आवश्यक होता है अर्थात भारोत्तोलन के खिलाड़ी को शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों से मजबूत होना चाहिए।

जब तक भारोत्तोलक के दोनों हाथ सिर के ऊपर और सीध में नही उठते तब तक वह अच्छा भारोत्तोलक नही माना जाता है। इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि एक अच्छे भारोत्तोलक का दोनों हाथ उसके सिर के ऊपर तक जाना और सिर के सीध में होना अनिवार्य भी होता है। भारोत्तोलन का यह खेल खिलाड़ियों की शक्ति और उनकी दृढ़ता का भी परिचायक होता है। यही नहीं यह खिलाड़ी के साहस का भी प्रतीक होता है। भारोत्तोलन ओलम्पिक खेलों में एक बहुत ही महत्वपूर्ण खेल के रूप में स्थापित है। इस खेल के लिए खिलाड़ी में ताकत के साथ साथ तकनीकी का होना भी आवश्यक है। बिना इन दोनों के कोई भी खिलाड़ी एक अच्छा भारोत्तोलक नहीं हो सकता है। बिना तकनीकी के खिलाड़ी चोटिल भी हो सकते हैं अर्थात यदि कोई खिलाड़ी बिना तकनीकी ज्ञान के भारोत्तोलन करता है तो उसके चोटिल होने की सम्भावना अधिक होती है।

भारोत्तोलन के इस बेहतरीन खेल का प्रारम्भ दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण एशिया और ग्रीस में हुआ। किन्तु आज इस खेल का प्रचार और प्रसार विश्व के अधिकतर देशों में हो चुका है। अधिकतर देशों के युवक खिलाड़ी इस रोमांचक खेल में अपना भविष्य बनाना चाहते हैं। इस खेल की लोकप्रियता के बढ़ने पर सन 1905 ई० में अंतर्राष्ट्रीय भारोत्तोलन संघ की स्थापना की गयी। अंतर्राष्ट्रीय भारोत्तोलन संघ के द्वारा प्रत्येक वर्ष पुरुष और महिला दोनों वर्गों में विश्व चैंपियनशिप कराई जाती है। हालाँकि भारोत्तोलन नाम से जितना सरल खेल दिखता है, वास्तव में उतना सरल खेल है नहीं।

वैज्ञानिकों द्वारा किये गए एक सर्वे में यह संज्ञान में आया है कि व्यक्ति की उम्र के साथ ही साथ उसके शरीर व हड्डियों का कमजोर होना स्वभाविक प्रक्रिया है, किन्तु इस व्यायाम के माध्यम से शरीर की हड्डियों को हम मजबूत बना सकते हैं और अधिक समय तक इस बनाये भी रख सकते हैं। साथ ही इस व्यायाम के द्वारा शरीर में खून के प्रवाह को निरन्तर बनाये रखा जा सकता है अर्थात रक्तचाप को बेहतर रखा जा सकता है।

इस प्रकार भारोत्तोलन का यह खेल मनोरंजन के साथ ही साथ स्वास्थ्य को बेहतर बनाये रखने में भी सहायक होता है। इस खेल के माध्यम से हम इज्जत, शोहरत और स्वास्थ्य सभी प्रकार से लाभ का अर्जन कर सकते हैं।

बबलू सोनी,
सहायक शिक्षक,
प्राथमिक विद्यालय उतरार,
विकास खण्ड–बाबागंज,
जनपद–प्रतापगढ़।

सेल्फी विद निपुण स्टूडेंट कैम्पेन

उद्देश्य- निपुण बच्चों का उत्साहवर्धन एवं शिक्षकों का प्रोत्साहन तथा निपुण भारत मिशन का सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचार–प्रसार करना ताकि निपुण भारत मिशन को गति मिल सके।

प्रतिभागी- कक्षा एक से तीन तक के बच्चे, शिक्षक / शिक्षिकाएँ, शिक्षक संकुल, **ARP**, **SRG**, डायट मेंटर, **BEO**, **DC**. प्रशिक्षण, **BSA**, अभिभावक आदि।

आयोजक– खण्ड शिक्षा अधिकारी। व्यवस्था– सभी **ARP, SRG**, शिक्षक संकुल एवं शिक्षकों के सहयोग से निपुण लक्ष्य एप के द्वारा बच्चों का आकलन करते हुए निपुण बच्चों के साथ सेल्फी लेकर सोशल मीडिया पर डालना।

जिम्मेदारी- हेड टीचर, शिक्षक एवं अभिभावक निपुण बच्चों के साथ सेल्फी लें तथा उसका प्रचार–प्रसार सोशल मीडिया पर करें।

स्थान- विद्यालय, घर और परिवेश।

समय- किसी भी समय।

जन समुदाय का जुडाव– आजकल सोशल मीडिया पर सभी लोग एक्टिव रहते हैं। **#Selfie_with_nipun_student** कैम्पेन के फोटो सोशल मीडिया पर देखकर अभिभावक व जन समुदाय निपुण भारत मिशन के प्रति जागरुक होगा तथा आत्मीय रूप से जुड़ेगा। सामग्री– स्मार्टफोन।

प्रक्रिया/गतिविधि- निपुण लक्ष्य एप से आकलन के पश्चात् निपुण लक्ष्य प्राप्त कर चुके बच्चों के हाथ में निपुण रिजल्ट स्कीन के साथ फोन देकर शिक्षक/मेंटर/अभिभावक सेल्फी लेंगे तथा उसे सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यू ट्यूब, व्हाट्सएप स्टेटस आदि पर **#Selfie_with_nipun_student** हैस्टैग के साथ भेजेंगे। सेल्फी के साथ बच्चे का नाम, कक्षा तथा विद्यालय का नाम भी लिखेंगे तो अधिक उपयोगी होगा।

संप्राप्ति/प्रभाव- निपुण लक्ष्यों की प्राप्ति में प्रतिस्पर्धा, शिक्षकों का प्रोत्साहन, बच्चों का उत्साहवर्धन, अभिभावकों और जन समुदाय का जुड़ाव तथा शून्य निवेश में निपुण भारत मिशन का वृहद प्रचार–प्रसार।

जितेन्द्र कुमार (ए०आर०पी०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर–1
ब्लॉक– बागपत, जनपद– बागपत

शैक्षिक तकनीक अधिगम प्रक्रिया को मजबूती प्रदान करती है

शिक्षण संवाद

शिक्षण तकनीक यानि 'एजुकेशनल' टेक्नोलॉजी जो दो 'शब्दों' से मिलकर बना हुआ है, एजुकेशन का अर्थ शिक्षा देना, पढ़ना, सीखना और तकनीकी का अर्थ हमें ऐसी प्रक्रियाओं का प्रयोग करना है जिससे हमारा बच्चा पूर्णतया सीख जाए अर्थात हमें अपनी शिक्षण विधि को आकर्षक प्रभावशाली एवं सरल से सरल बनाने के विभिन्न तकनीकियों का प्रयोग करना है ताकि शिक्षक एवं बच्चों के बीच अतः क्रियाएं कायम रहे।

बी०एफ० स्किनर के अनुसार, 'शिक्षण तकनीकी भाषा है जो शिक्षा की प्रभावशीलता में वृद्धि करता है तथा संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया को अपेक्षाकृत अधिक समुन्नत करता है'। शिक्षक के दो तत्व महत्वपूर्ण होते हैं, पाठ्यवस्तु एवं संप्रेषण जब हम शिक्षण कार्य करते हैं तो हमें अधिगम की प्राप्ति होती है यानी हमनें जो पढ़ाया बच्चों ने कितना सीखा? इसके लिए हम सुंदर, सरल और आकर्षक कक्षा कक्ष का प्रभावी वातावरण नियमित करते हैं, अपनी शिक्षा पद्धति में सहयोग साधनों व नीतियों से अपने शिक्षण कार्य को व्यवहारिक बनाते हैं ताकि बच्चों को सरलता से समझ में आ सके शिक्षाविदों ने भी कहा है, जैसे – डॉक्टर जी०बी डिसिको के अनुसार, 'शैक्षिक तकनीक व्यावहारिक शिक्षण की समस्याओं में अधिगम मनोविज्ञान में विस्तृत प्रयोग का रूप है।' इस तरह शिक्षण तकनीकियों का प्रयोग करके हम बच्चों के व्यवहारों को भी नियंत्रण करना सिखाते हैं, एक शिक्षक होने के नाते हम अपनी एक योजना बनाते हैं या निर्धारण कर लेते हैं कि पाठय–सामग्री शिक्षण उद्देश्य एवं विश्लेषण कैसा हो? बच्चों को समझने में आसानी पैदा करें और आगे क्या होगा उत्सुकता एवं जागरूकता बनी रहे, इसमें कोई दो राय नहीं कि शिक्षा तकनीकी ने हमें बहुत कुछ दिया है। मॉड्यूल, विभिन्न प्रकार के ऐप खेल विधि, खेल गतिविधियां, मोबाइल, प्रोजेक्टर, टेलीविजन, रेडियो, कंम्प्यूटर इत्यादि सीखने सिखाने के बेहतरीन माध्यम हैं। आज हमारा शिक्षण क्षेत्र वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में आगे बढ़ रहा है शिक्षा के क्षेत्र में हम भी आईसीटी का प्रयोग कर रहे हैं। यह शैक्षिक तकनीकीकरण हमें निरंतर तकनीकी के करीब ला रहा है, हमारी तकनीकी दिनों दिन समृद्ध और शक्तिशाली हो रही है हमारी शिक्षण तकनीक में नवीन एवं क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे हैं, इसमें कोई संदेह नहीं आईसीटी का माध्यम हमारे शिक्षण को और अधिक भाव पूर्ण एवं परिपूर्ण बनाने में पूर्णतया सहयोगी है। डॉक्टर एस० एस० कुलकर्णी के अनुसार, 'शैक्षिक तकनीकी उन सभी प्रणालियों, विधियों एवं माध्यमों का विज्ञान है जिसके द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है।' वास्तव में शिक्षा को सरल स्पष्ट रुचिकर एवं प्रभावी बनाना, शिक्षण के अधिगम स्तर में सुधार लाना, शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण करना, जिससे मूल्यांकन में भी आसानी हो, छात्रों के गुणों, क्षमताओं, उपलब्धियों एवं कौशलों, को समझना, शैक्षिक तकनीकी के ज़रिये हम बच्चों के पाठ्यक्रम में सरसता, स्पष्टता लाकर एवं रुचिकर बनाकर प्रस्तुत कर सकते हैं, और उनको पढ़ाई के प्रति आकर्षित कर सकते हैं।

बच्चों को समूह में कार्य करने की भावना जागृत करना, रचनात्मकता की ओर अग्रसर

करना, एक शिक्षक होने के नाते हमें सबसे पहले अपनी योजना अवश्य बना लेना चाहिए या निर्धारण कर लेना चाहिए कि हमारा पाठ्यक्रम, सामग्री, शिक्षण उद्देश्य एवं विश्लेषण कैसा हो? जो सीधे बच्चों को समझने में आसानी पैदा करें, ताकि उनमें उत्सुकता एवं जागरूकता बनी रहे। डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम ने भी कहा था। 'शिक्षा के संबंध में मेरा विचार है कि उसके द्वारा बच्चों में रचनात्मक शक्ति का विकास हो।' आज हमारा युग वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में निरंतर आगे बढ़ रहा है, आज शिक्षण तकनीक ने हमें दूर–दूर के कार्यों को भी करने में सहायता की है। शैक्षिक तकनीकी शब्द सीखने पर बल देती है उदाहरण के लिए बच्चे के घर पर टेलीविजन और मोबाइल है, तो घर बैठकर अपने शैक्षिक ऐप खोलकर घर बैठे ही पढ़ सकते हैं कोविड जैसी महामारी के समय भी हम लोगों ने बच्चों को ऐसी शिक्षा उपलब्ध कराने में एक बड़े पैमाने पर कार्य किया था।

शैक्षिक तकनीकी अधिगम प्रक्रिया को भी सरलता और मजबूती प्रदान करती है जहां तक शैक्षिक तकनीकी के फैलाव की बात करें तो इसमें कुछ रुकावटें भी हैं जैसे 'धन' जो किसी भी तकनीक के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। अब हमारे पास दृश्य एवं श्रव्य साधन उपकरणों का ग्रामीण क्षेत्रों में या निम्न गरीब वर्गों में अभी थोड़ा अभाव है। यहां तक कि उनके घरों में रहने, खाने, एवं सोने का सिस्टम भी नहीं है जो पढ़ाई के लिए चिंतन ,मनन और उत्सुकता एवं जागरूकता का कारण बने, उनके घरों में स्कूल जैसी एक भी उपलब्धि नहीं है जिससे वे गृह कार्य भी कर सकें। ऐसे में तकनीकी एवं शिक्षा के वातावरण का होना उनके लिए आवश्यक है, फिर भी आज हमारी शैक्षिक तकनीकी की उपयोगिता बढ़ती जा रही है, शैक्षिक तकनीक के ज़रिए हम छात्रों में सोचने एवं समझने की प्रक्रिया पर कार्य कर सकते हैं, शिक्षाविद गिजुभाई ने भी अपनी तकनीकी में कहा है कि 'शिक्षा ऐसी होना चाहिए जो बालक को स्वावलंबी, निर्भय, सृजनशील, हुनरमंद और अभिव्यक्ति शील बनाए।'

यद्यपि हमारी शैक्षिक तकनीकी का भविष्य अवश्य उज्ज्वल होगा, शैक्षिक तकनीक उनकी क्षमता के अनुसार ज्ञान करवा कर नित नये सीखने के प्रतिमान देती है। शिक्षण तकनीक हम शिक्षकों की उपादेयता बढ़ाती है, आज शैक्षिक तकनीकी के ज़रिए किसी शिक्षक, राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक के ज्ञान कौशल को सरलता से समाज के समक्ष प्रदर्शित किया जा सकता है, हमारी शिक्षक तकनीकी निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर हो रही है और होती रहेगी अपने कार्यों के प्रति नए कौशलों का विकास करना ही हमारी शिक्षा का उद्देश्य है।

फरहत माबूद
प्रधानाध्यापिका
प्रा0 वि0 तियरा, विकासखण्ड– कौडिहार 2
जनपद– प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

सर जी

शिक्षण संवाद

शिक्षक, शिक्षार्थी एवं समाज में आपसी प्रेम, प्रोत्साहन और विश्वास के द्वारा सीखने सिखाने तथा सकारात्मक कार्य व्यवहार और विचारों के अवसर प्रदान करते हुए आपसी प्रेम और विश्वास को मजबूती प्रदान करने का अत्यंत सुंदर प्रयास किया गया है, जिसे हम एक सूत्रीय उद्देश्य के रूप में कह सकते हैं। वर्तमान मे अगर कहा जाये तो कोई भी अतिश्योक्ति नहीं होगी कि फिल्म 'सर जी' ने बदलती हुई शिक्षण पद्धतियों व शिक्षक और बालकों के बीच आत्मीय सबंध को चरितार्थ करने के लिए एक मिसाल पेश की है। एक शिक्षक जिस तरह राष्ट्र का अंगीकार होता है ठीक उसी तरह बच्चे और उनसे जुड़े हुए पहलू भी राष्ट्र के विकास मे अहम भूमिका निभाते है।

आज बदलते समाज के परिप्रेक्ष्य में खेल, मनोरंजन बच्चों के बीच आत्मीय संबंध को परिपक्व बनाने के साथ ही आत्मविश्वास को विकसित करता है। फिल्म में नकारात्मक चरित्र के माध्यम से समाज मे फैली हुई भ्रान्तियों और दूषित मानसिकताओं को समाप्त करने का प्रयास सराहनीय है। इस बाल फिल्म में एक दृश्य है जिसमे शिवम जी स्थानान्तरित होकर जब विद्यालय आते है और कार्यभार ग्रहण करते है एवं तुरन्त ही शिक्षण कार्यों में लिप्त हो जाते हैं, तब प्रधानाध्यापक जी भावुक हो जाते हैं, यह सोचकर कि अब उनका विद्यालय परिवार अच्छे से आगे बढ़ेगा। यह दृश्य बेहद ही सुखद अनुभूति प्रदान करता है। एक अन्य दृश्य जिसमें बच्चे अपनी मां के लिए अपने पवित्र मन से छठ पूजा को संपन्न करते है। यह दृश्य समाज के लिए माँ के प्रति स्नेह, आदर और समर्पण को दर्शाता है। समाज में फैली हुई जातिप्रथा ,भेदभाव और कुंठित मंशा को समाप्त करने का बहुत ही सहजता और सुंदर तरह से चित्रण किया गया है। जिसमें एक डूबते बच्चे को शिक्षक द्वारा बचाया जाता है जिसने उसके पिता यानी समाज का एक अंग के हृदय् को परिवर्तित कर दिया है। ये हमें सिखाते है कि कैसे प्रेम पूर्वक ,अहिंसा के मार्ग को अपना कर समाज को बदला जा सकता है।

फिल्म में सबसे अहम पहलू जिसने मेरे हृदय और आत्मा को गहराई तक स्पर्श किया है जब एक अभिभावक जो भेड़ पालक होता है, वह अपने बच्चे को निजी विद्यालय मे प्रवेश दिला देता है। ऐसे में फीस, यूनिफार्म, पुस्तकें जैसी विभिन्न वस्तुओं को खरीदकर भी देता है जबकि सरकारी विद्यालय मे ऐसे अभिभावक कुछ भी सहयोग नहीं करते हैं। आज ये भयावह स्थिति देखकर एक शिक्षक (शिवम जी) की आँखों से आँसू बहने लगे जो हमारे समाज को ये दर्शाता है कि आज हमें हमारी मानसिकता में बदलाव लाने की आवश्यकता है। ये आँसू न केवल एक शिक्षक के हैं, बल्कि सम्पूर्ण देश के शिक्षकों के आँसू हैं, जो बीज को रोपित करके पौधे को जीवन भर सींचते है, ठीक उसी प्रकार एक बालक को रात दिन मेहनत करके निपुण बनाते है और कुछ लोग समाज में फैली भ्रान्तियों के कारण उस बालक रुपी पौधे को किसी के हाथों सौंप देते हैं। ऐसी ही विभिन्न परिस्थितियों में जूझकर एक शिक्षक अपनी पीड़ा को सहन करते हुये पुनः नये प्रयास करने लगता है।

फिल्म का तीसरा सबसे महत्वपूर्ण पहलू जिसने सबसे ज्यादा गहरा प्रभाव डाला है जिसमें ये दिखाया गया है कि कैसे समाज में एक व्यक्ति बदले की भावना से ग्रसित होकर एक समाज के अंगीकार और निस्वार्थ भाव से कार्य करने वाले व्यक्ति की बढ़ती प्रतिष्ठा से आहत होकर उसके चरित्र पर आक्रमण करता है। उसे गिराने की कोशिश करता है। वह ये भूल जाता है कि कोई भी व्यक्ति समाज का एक अंग होता है और हमारे जीवन में उसका मूल्य अहम होता है। हमें सदैव आदर्श व्यक्तित्व पेश करना चाहिए। अतः उक्त परिस्थितियों के लिए मैं कहना चाहूंगा–

'माना उल्टे पड़ सकते हैं, जीवन में कुछ दाँव हमारे,
चलते–चलते थक सकते हैं, कभी–कभी ये पाँव हमारे,
माना धीमी पड़ सकती है, कभी–कभी रफ्तार हमारी,
छोटे–छोटे खेलों में, हाँ, हो सकती है हार हमारी
लेकिन हम हिम्मत के आदी हैं
और अंतिम युद्ध हम ही जीतेंगे
और अंतिम युद्ध हम ही जीतेंगे'

फिल्म 'सर जी' देश के विभिन्न विद्यालयों, बालकों, अभिभावकों और समाज के विभिन्न अंगों को भावनात्मक, आत्मीयता, सहानुभूति और पश्चाताप जैसे विभिन्न गुणों के माध्यम से जोड़ती है। इस बाल फिल्म के माध्यम से एक नये भारत के निर्माण, बेसिक शिक्षा विभाग के साथ–साथ एक नये समाज के निर्माण करने के लिए एक नये सूरज का उदय हुआ है। बच्चों और शिक्षक के बीच आत्मीय सम्बन्ध ऐसे होने चाहिए, जहाँ शिक्षक और बच्चे अपने बचपन को 'जीना सीखें और सिखायें'

बेसिक शिक्षा विभाग में एक नये कीर्तिमान को स्थापित करने के लिए फिल्म 'सर जी' की समस्त टीम को हार्दिक बधाइयाँ।

पवन भारती
(प्रभारी प्रधानाध्यापक)
प्राथमिक विद्यालय बसेला
विकास क्षेत्र– दातागंज
जनपद – बदायूँ

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः– मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने–सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल **shikshansamvad@gmail.com** या व्हाट्सएप्प नम्बर–**9458278429** पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/1180108654646 49
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. Twitter@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू–टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : **9458278429**
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात